गुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव अपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ५४॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ५५ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

सुहुमआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ५६ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ५७ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ५८ ॥

गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

२४ उसके ही अपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है । ५४ ।

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

२५ उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ।५५।

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

२६ उससे सूक्ष्म जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ५६ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

२७ उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ५७।

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

२८ उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ५८।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

सुहुमपुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ५९ ॥

को गुणगारो ? आवलियाए❋ असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ६० ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ६१ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

बादरवाउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ६२ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ६३ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

२९ उससे सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ५९ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ।

३० उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ।६०।

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

३१ उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ।६१।

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

३२ उससे बादर वायुकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ६२ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

३३ उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ।६३।

❋ प्रतिषु 'पलिदोवमस्स' इति पाठः ।

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ६४ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

बादरतेउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ६५ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ६६ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ६७ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

बादरआउक्काइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ६८ ॥

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

३४ **उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष** अधिक है ।६४।

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

३५ **उससे बादर तेजकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी** है ॥ ६५ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

३६ **उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक** है ।६६।

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

३७ **उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष** अधिक है ।६७।

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

३८ **उससे बादर जलकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी** जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ६८ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ६९ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ७० ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

बादरपुढविकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स✲ जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ७१ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ७२ ॥

केत्तियमेत्तेण ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ७३ ॥

गुणकार कितना है ? वह पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

३९ उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ।६९।

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

४० उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ।७०।

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

४१ उससे बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ७१ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

४२ उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ।७२।

कितने मात्रसे वह अधिक है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्रसे अधिक है ।

४३ उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना उससे विशेष अधिक है ।७३।

✲ प्रतिषु 'णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स' इति पाठः ।

केत्तियमेत्तेण ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।

बादरणिगोदणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ७४ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ७५ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ७६ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

णिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ७७ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तस्सेव णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ७८ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

कितने मात्रसे वह अधिक है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्रसे अधिक है ।

४४ उससे बादर निगोद निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है।७४।

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

४५ उससे उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ।७५।

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

४६ उससे ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ।। ७६ ।।

विशेष कितना हैं ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

४७ उससे निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ।७७।

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

४८ उससे उसके ही निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ।७८।

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

तस्सेव णिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा विसेसाहिया ॥ ७९ ॥

केत्तियमेत्तो विसेसो ? अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ८० ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ ८१ ॥

को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा* **॥ ८२ ॥**

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

---

४९ उससे उसके ही निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ।७९।

विशेष कितना है ? वह अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।

५० उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है ॥ ८० ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

५१ उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है । ८१ ।

गुणकार क्या है ? गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ।

५२ उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है । ८२ ।

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

५३ उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है ।८३।

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

---

* प्रतिषु 'असंखेज्जगुणा' इति पाठः ।

पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स जहण्णिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

तेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८५ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

चउरिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८६ ॥

(को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।)

बेइंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८७ ॥

को गुणगारो? संखेज्जा समया ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८८ ॥

को गुणगारो? संखेज्जा समया ।

---

५४ उससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी जघन्य अवगाहना संख्यातगुणी है । ८४ ।
गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

५५ उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है । ८५ ।
गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

५६ उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ।८६।
(गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।)

५७ उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ।८७।
गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

५८ उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ।। ८८ ।।
गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

पंचिंदियणिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ८९ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

तेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ९० ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

चउरिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ९१ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

बेइंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ९२ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ९३ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

---

५९ उससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥८९॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

६० उससे त्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥९०॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

६१ उससे चतुरिन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है।९१।

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

६२ उससे द्वीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥९२॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

६३ उससे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥ ९३ ॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

पंचिंदियणिव्वत्तिपज्जत्तयस्स उक्कस्सिया ओगाहणा संखेज्जगुणा ॥ ९४ ॥

को गुणगारो ? संखेज्जा समया ।

संपधि पुव्वपरूविदअप्पाबहुगम्मि गुणगारपमाणपरूवणट्ठं उवरिमसुत्ताणि भणदि—

सुहुमादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ॥ ९५ ॥

सुहुमादो अण्णस्स सुहुमस्स ओगाहणा असंखेज्जगुणा त्ति जत्थ जत्थ भणिदं तत्थ-तत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो त्ति घेत्तव्वो ।

सुहुमादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९६ ॥

सुहुमेइंदियओगाहणादो जत्थ बादरोगाहणमसंखेज्जगुणमिदि भणिदं तत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो होदि त्ति घेत्तव्वं ।

बादरादो सुहुमस्स ओगाहणगुणगारो आवलियाए असंखेज्जदिभागो ॥ ९७ ॥

बादरोगाहणादो जत्थ सुहुमेइंदियओगाहणा असंखेज्जगुणा त्ति भणिदं तत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो त्ति घेत्तव्वो ।

---

६४ उससे पंचेन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुणी है ॥९४॥

गुणकार क्या है ? गुणकार संख्यात समय है ।

अब पहिले कहे गये अल्पबहुत्वमें गुणकारोंके प्रमाणको बतलानेके लिये आगेके सूत्र कहते हैं—

६५ एक सूक्ष्म जीवसे दूसरे सूक्ष्म जीवकी अवगाहनाका गुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ॥ ९५ ॥

एक सूक्ष्म जीवसे दूसरे सूक्ष्म जीवकी अवगाहना असंख्यातगुणी है, ऐसा जहां जहां कहा गया है वहां वहां आवलीका असंख्यातवा भाग गुणकार ग्रहण करना चाहिये ।

६६ सूक्ष्मसे बादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है ९६

सूक्ष्म एकेन्द्रियकी अवगाहनासे जहां बादर जीवकी अवगाहना असंख्यातगुणी कही है, वहां पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

६७ बादरसे सूक्ष्मका अवगाहनागुणकार आवलीका असंख्यातवां भाग है ॥ ९७ ॥

बादरकी अवगाहनासे जहां सूक्ष्म एकेन्द्रियकी अवगाहना असंख्यातगुणी कही है वहां आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार होता है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९८ ॥

एत्थ बादरा त्ति उत्ते जेण बादरणामकम्मोदइल्लाणं जीवाणं गहणं तेण बीइंदियादीणं पि गहणं होदि। बादरओगाहणादो अण्णा बादरओगाहणा जत्थ असंखेज्जगुणा त्ति भणिदं तत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो त्ति घेत्तव्वो।

बादरादो बादरस्स ओगाहणगुणगारो संखेज्जा समया ॥९९।

बीइंदियादिणिव्वत्तिअपज्जत्तएसु तेसिं पज्जत्तएसु च ओगाहणगुणगारो संखेज्जा-समया त्ति घेत्तव्वो। पुव्विल्लसुत्तेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागे गुणगारे पत्ते तप्पडिसेहट्ठमिदं सुत्तमारद्धं, तेण ण दोण्णं सुत्ताणं विरोहो। एदे एत्थ गुणगारा होंति त्ति कधं णव्वदे ? एदम्हादो चेव सुत्तादो णव्वदे। ण च पमाणं पमाणंतरमवेक्खदे, अणवत्थावसंगादो। णाणावरणादीणमट्ठण्णं पि कम्माणमोगाहणपरूवणट्ठं खेत्ताणुयोगद्दारे परूविज्जमाणे जीवसमासाणमोगाहणपरूवणा किमट्ठ(⁎)मेत्थ परूविदा ? एत्थ परिहारो

बादरसे बादरका अवगाहनागुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है।९८।

यहां सूत्रमें 'बादरसे' ऐसा कहनेपर चूंकि बादर नामकर्मके उदय युक्त जीवोंका ग्रहण है, अतः उससे द्वीन्द्रियादिक जीवोंका भी ग्रहण होता है। बादरकी अवगाहनासे जहां दूसरे बादर जीवकी अवगाहना असंख्यातगुणी कही है वहां पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार ग्रहण करना चाहिये,

बादरसे दूसरे बादर जीवकी अवगाहनाका गुणकार संख्यात समय है।९९।

द्वीन्द्रिय आदिक निर्वृत्त्यपर्याप्तकों और उनके पर्याप्तकोंमें अवगाहनाका गुणकार संख्यात समय है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। पूर्व सूत्रसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र गुणकारके प्राप्त होनेपर उसका प्रतिषेध करनेके लिये यह सूत्र रचा गया है। इसीलिये उपर्युक्त दोनों सूत्रोंमें कोई विरोध नहीं है।

शंका-- ये यहां गुणकार होते हैं, ऐसा कैसे जाना जाता है ?

समाधान-- वह इसी सूत्रसे जाना जाता है। कारण कि एक प्रमाण दूसरे प्रमाणकी अपेक्षा नहीं करता है, क्योंकि, वैसा होनेपर अनवस्थाका प्रसंग आता है।

शंका-- ज्ञानावरणादिक आठों कर्मोंकी अवगाहनाके प्ररूपणार्थ क्षेत्रानुयोगद्वारकी प्ररूपणा करते समय जीवसमासोंकी अवगाहनाकी प्ररूपणा यहां किसलिये की गई है ?

समाधान-- यहां इस शंकाका उत्तर कहते है-- यह अवगाहना सम्बन्धी

(⁎) ताप्रतौ 'परूवणा (कीरदे) किमट्ठ-', इति पाठः।

उच्चदे । एसो ओगाहणप्पाबहुअदंडओ जीवसमासाणं ण परूविदो, अप्पाबहुअस्स असंबद्धप्पसंगादो । किंतु अट्ठण्णं पि कम्माणं जीवसमासेहिंतो अभेदेण लद्धजीवसमासववएसाणमोगाहणप्पाबहुअदंडओ एसो परूविदो त्ति । किमट्ठमेसा अप्पाबहुगपरूवणा कदा ? समुग्घादेण विणा णाणावरणादीणमट्ठण्णं पि कम्माणं सत्थाणोगाहणाणं जीवसमासभेदेण भिण्णाणं माहप्पपरूवणट्ठं कदा, णाणावरणादीणमजहण्ण-अणुक्कस्ससत्थाणखेत्तट्ठाणपरूवणट्ठं वा। एवमप्पाबहुगं सगंतोक्खित्तगुणगारहियारं समत्तं। एवं वेयणखेत्तविहाणे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

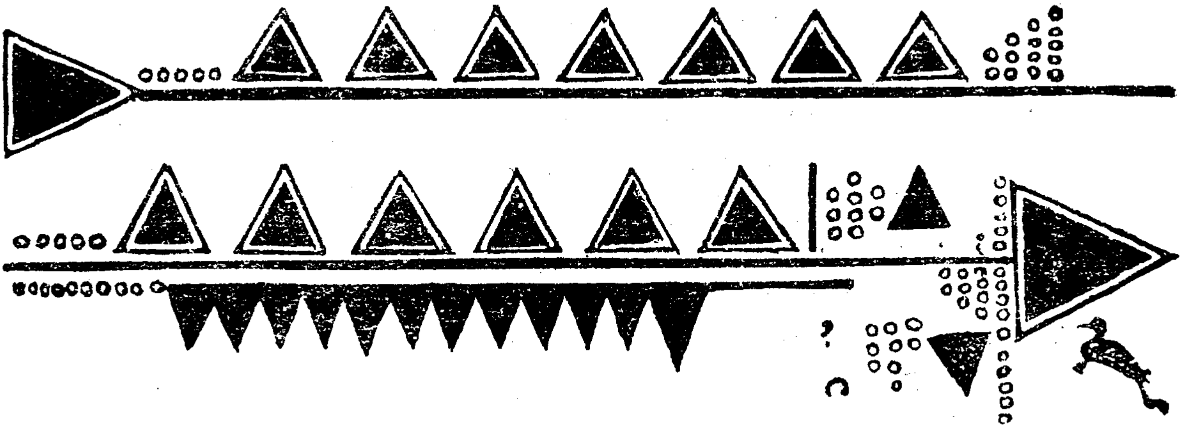

एदाओ सोलस उवरिमाओ ओगाहणाओ तिसमयआहारय-तिसमयतब्भवत्थलद्धिअपज्जत्तयाणं जहण्णाओ घेत्तव्वाओ☼। आदिप्पहुडि सत्तारस ओगाहणाओ पदेसुत्तरकमेण

अल्पबहुत्वदण्डक जीवसमासोंका नहीं कहा गया है, क्योंकि, वैसा करनेसे उक्त अल्पबहुत्वके असंगत होनेका प्रसंग आता है। किन्तु यह जीवसमासोंसे अभिन्न होनेके कारण जीवसमास संज्ञाको प्राप्त हुए आठों कर्मोंकी ही अवगाहनाका अल्पबहुत्वदण्डक कहा गया है।

शंका-- यह अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा किसलिये की गई है ?

समाधान-- जीवसमासके भेदसे भेदको प्राप्त हुए ज्ञानावरणादिक आठों कर्मोंकी समुद्घात रहित स्वस्थान अवगाहनाओंके माहात्म्यको बतलानेके लिये उक्त प्ररूपणा की गई है। अथवा, ज्ञानावरणादिक कर्मोंके अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्वस्थान क्षेत्रस्थानोंकी प्ररूपणा करनेके लिये उपर्युक्त प्ररूपणा की गई है। इस प्रकार अपने भीतर गुणकार अधिकारको रखनेवाला अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

इस प्रकार वेदनाक्षेत्रविधान यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

ये उपरिम सोलह अवगाहनायें त्रिसमयवर्ती आहारक त्रिसमयवर्ती तद्-भवस्थ लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंकी जघन्य ग्रहण करना चाहिये। आदिसे लेकर सत्तरह

१ ▼▼▼▼▼▼▼▼▼▼▼▼▼▼▼▼ ☼ ताप्रतौ 'घेत्तव्वाओ०' इति पाठः। अवरमपुण्णं पढमं सोलं पुण पढम-बिदिय-तदियोली। पुण्णिदर-पुण्णियाणं जहणमुक्कस्समुक्कस्सं ॥ गो. जी ९९.

णिरंतरं वड्ढावेदव्वाओ। पुणो जत्थ जिस्से ओगाहणा समप्पदि तक्काले ठविदोगाहणसलागासु रूवमवणेदव्वं, हेट्ठिल्लोगाहणाहि सह♠ हेट्ठा णिरंतरमागंतूण उवरि गमणाभावादो। पुणो जत्थ जत्थ जहण्णोगाहणाओ पदंति तत्थ तत्थ पुव्वट्ठविदसलागासु रूवं पक्खिविदव्वं, हेट्ठिल्लोगाहणवियप्पसलागासु एदस्से◆ णत्थि त्ति। सेसं जाणिय वत्तव्वं।

एदाओ एक्कारस उक्कस्सोगाहणाओ उवरिमाओ णिव्वत्तिअपज्जत्ताणमुक्कस्साओ। एदाओ कस्स हवंति❋? से काले पज्जत्तो होहदि त्ति ट्ठिदस्स होंति। लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा किण्ण गहिदा☼? ण, लद्धिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणादो णिव्वत्तिअपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणाए विसेसाहियभावेण विणा असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। हेट्ठिमाओ सुहुमणिगोदाओ✿ णिव्वत्तिपरंपरपज्जत्तीए पज्जत्तयदाणं घेत्तव्वाओ। ताओ कत्थ होंति त्ति उत्ते पज्जत्तयदपढमसमए वट्टमाणस्स जहण्णउववाद-एयंताणुवड्ढिजोगेहि आगंतूण जहण्णपरिणामजोगे जहण्णोगाहणाए च वट्टमाणस्स⊗ एक्कारस वि होंति। पुणो णिव्वत्ति-

अवगाहनाओंको प्रदेश अधिक क्रमसे निरन्तर बढाना चाहिये। फिर जहां जिसकी अवगाहना समाप्त होती है उस कालमें स्थापित अवगाहनाशलाकाओंमेंसे एक रूपको कम करना चाहिये, क्योंकि, अधस्तन अवगाहनाओंके साथ नीचे निरन्तर आकर ऊपर गमनका अभाव है। फिर जहां जहां जघन्य अवगाहनायें पडती हैं वहां वहां पूर्व स्थापित शलाकाओंमें एक रूपको मिलाना चाहिये, क्योंकि, अधस्तन अवगाहनाके विकल्पभूत शलाकाओंमें इसकी शलाका नहीं है। शेष जानकर कहना चाहिये।

ये उपरिम ग्यारह उत्कृष्ट अवगाहनायें निर्वृत्त्यपर्याप्तकोंकी उत्कृष्ट हैं।

शंका-- ये किसके होती हैं ?

समाधान-- जो जीव अनन्तर कालमें पर्याप्त होनेवाला है उसके वे अवगाहनायें होती हैं।

शंका-- लब्ध्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनाको क्यों नहीं ग्रहण किया ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, लब्ध्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहनासे निर्वृत्त्यपर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिकताके विना असंख्यातगुणी पायी जाती है।

सूक्ष्म निगोदसे लेकर अधस्तन (ग्यारह जघन्य अवगहनायें) निर्वृत्तिपरम्परा पर्याप्तिसे पर्याप्त हुए जीवोंकी ग्रहण करना चाहिये।

शंका-- वे अवगाहनायें कहांपर होती हैं ?

समाधान-- इस शंकाके उत्तरमें कहते हैं कि जो पर्याप्त होनेके प्रथम समयमें वर्तमान है तथा जघन्य उपपादयोग और जघन्य एकान्तानुवृद्धियोगसे आकर जघन्य परिणामयोग व जघन्य अवगाहनामें रहनेवाला है उसके वे ग्यारह ही अवगाहनायें होती हैं।

♠ ताप्रतौ 'हेट्ठिल्लोगाहणादि-सह' इति पाठः। ◆ एदस्स जहण्णोगाहणसलागाए अभावादो एवं सव्वत्थ जोजेयव्व ---- कस्सोगाहणात्ति सेसं जाणिय वत्तव्वं। ❦ प्रतिपु 'एदिस्से णत्ति'; ताप्रतौ 'एदिस्से त्ति' इति पाठः। ❋ मप्रतिपाठोऽयम्। प्रतिषु 'हवदि', ताप्रतौ 'हवदि (होंति)' इति पाठः। ☼ ताप्रतौ 'लहिदा' इति पाठः। ✿ ताप्रतौ 'णिगोदाओ (णं)' इति पाठः। ⊗ ताप्रतौ 'वट्टामणस्स' इति पाठः।

पज्जत्ताणं हेट्ठिमाओ एक्कारस उक्कस्सओगाहणाओ उक्कस्सजोगिस्स उक्कस्सओगाहणाए✿ वट्टमाणस्स परंपरपज्जत्तीए पज्जत्तयदस्स होंति। एदाओ ओगाहणाओ अप्पप्पणो जहण्णादो उक्कस्साओ विसेसाहियाओ होंति। सुहुमणिगोदलद्धिअपज्जत्तजहण्णोगाहणप्पहुडि सव्वजहण्णुक्कस्सोगाहणाओ जाव बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तजहण्णोगाहणं पावेंति ताव अंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तीयो। बीइंदियादिपज्जत्ताणं जहण्णोगाहणाओ अंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तीयो❋। बीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा अणुंधरिम्हि होदि। तीइंदियपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा कुंथुम्हि होदि। चदुरिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा काणमच्छियाए। पंचिंदियपज्जत्तयस्स जहण्णोगाहणा सित्थमच्छम्मि होदि✡। तीइंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा तिण्णिगाउअप्पमाणा। सा कम्हि होदि ? गोम्हिम्हि। चउरिंदियपज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा चत्तारिगाउअप्पमाणा। सा कत्थ ? भमरम्मि। बीइंदियस्स पज्जत्तयस्स उक्कस्सोगाहणा बारस जोयणाणि। सा कत्थ ? संखम्मि। एइंदियउक्कस्सोगाहणा संखेज्जाणि जोयणाणि। सा कत्थ ? जोयणसहस्सायाम-

---

निर्वृत्तिपर्याप्तकोंकी अधस्तन ग्यारह उत्कृष्ट अवगाहनायें उत्कृष्ट अवगाहनामें वर्तमान व परम्परा पर्याप्तिसे पर्याप्त हुए उत्कृष्ट योगवाले जीवके होती हैं। ये अवगाहनायें अपने अपने जघन्यसे उत्कृष्ट विशेष अधिक होती हैं।

सूक्ष्म निगोद लब्ध्यपर्याप्तकर्की जघन्य अवगाहनासे लेकर सब जघन्य व उत्कृष्ट अवगाहनायें जब तक बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवकी जघन्य अवगाहनाको प्राप्त होती हैं तब तक अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र रहती हैं। द्वीन्द्रियादिक पर्याप्त जीवोंकी जघन्य अवगाहनायें अंगुलके संख्यातवें भाग प्रमाण हैं। द्वीन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना अनुन्धरीके होती है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना कुंथुके होती है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना कानमक्षिकाके होती है। पंचेन्द्रिय पर्याप्तककी जघन्य अवगाहना सिक्थ मत्स्यके होती है।

त्रीन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना तीन गव्यूति प्रमाण है। वह किसके होती है ? वह गोम्हीके होती है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना चार गव्यूति प्रमाण है। वह कहांपर होती है ? वह भ्रमरके होती है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तककी उत्कृष्ट अवगाहना बारह योजन प्रमाण है। वह कहांपर होती है? वह शंखके होती है। एकेन्द्रियकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यात योजन प्रमाण है। वह कहां होती है ? वह एक हजार योजन आयाम और एक योजन

✿ ताप्रतौ 'ओगाहणाओ' इति पाठः। ❋ अप्रतौ 'असंखेज्जदिभागमेत्तीयो' इति पाठः।

✡ बि-ति-च-पपुण्णजहण्णं अणुंधरी-कुंथु-काणमच्छीसु। सिच्छयमच्छे विदंगुलसंखं संखगुणिदकमा॥ गो. जी. ९६

जोयणविक्खंभपउमम्मि । पंचेंदियउक्कस्सोगाहणा संखेज्जाणि जोयणसहस्साणि । सा कत्थ ? पंचजोयणसदुस्सेह-तदद्धविक्खंभ-जोयणसहस्सायाममच्छम्मि* । एदेसिमपज्जत्ताणं तप्पडिभागो होदि ।

विस्तारवाले पद्मके होती है । पंचेन्द्रियकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यात हजार योजन है । वह कहां होती है ? वह पांच सौ योजन प्रमाण उत्सेध, इससे आधे विस्तार और एक हजार योजन आयामसे युक्त मत्स्यके होती है । इनके अपर्याप्तोंकी अवगाहनायें उक्त प्रमाणके प्रतिभाग मात्र होती हैं ।

---

* साहियमहस्समेकं वारं कोसूणमेकमेक्कं च । जोयणसहस्सदीहं पम्मे वियले महामच्छे ।। गो. जी ९५

वेयणकालविहाणे त्ति । तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति ॥ १ ॥

एत्थ कालो सत्तविहो-- णामकालो ट्ठवणकालो दव्वकालो समाचारकालो अद्धाकालो पमाणकालो भावकालो चेदि । तत्थ णामकालो णाम कालसद्दो । ठवणकालो सो एसो त्ति बुद्धीए एगत्तं काऊण ठविददव्वं । दव्वकालो दुविहो- आगमदव्वकालो णोआगमदव्वकालो चेदि । कालपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदव्वकालो । तत्थ णोआमगदव्वकालो तिविहो- जाणुगसरीरणोआगमदव्वकालो भवियणोआगमदव्वकालो जाणुगसरीरभवियतव्वदिरित्तणोआगमदव्वकालो चेदि । जाणुगसरीर-भवियणोआगमदव्वकाला सुगमा । तव्वदिरित्तणोआगमदव्वकालो दुविहो- पहाणो अप्पहाणो चेदि । तत्थ पहाणदव्वकालो णाम लोगागासपदेसपमाणो सेसपंचदव्वपरिणमणहेदुभूदो रयण✡रासि व्व पदेसपचयविसहियो अमुत्तो अणाइणिहणो । उत्तं च-

कालो परिणामभवो परिणामो दव्वकालसंभूदो ।
दोण्णं एस सहाओ कालो खणभंगुरो णियदो✤ ॥ १ ॥

वेदनकालविधान अनुयोगद्वार प्रारम्भ होता है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार जानने योग्य हैं ॥ १ ॥

यहां काल सात प्रकार है-- नामकाल, स्थापनाकाल, द्रव्यकाल, सामाचारकाल, अद्धाकाल, प्रमाणकाल और भावकाल । उनमें 'काल' शब्द नामकाल कहा जाता है । 'वह यह है' इस प्रकार बुद्धिसे अभेद करके स्थापित द्रव्य स्थापनाकाल है । द्रव्यकाल दो प्रकार है-- आगमद्रव्यकाल और नोआगमद्रव्यकाल । कालप्राभृतका जानकार उपयोग रहित जीव आगमद्रव्यकाल है । नोआगमद्रव्यकाल तीन प्रकार है- ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यकाल, भावी नोआगमद्रव्यकाल और ज्ञायकशरीर-भावितद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यकाल । इनमें ज्ञायकशरीर और भावी नोआगमद्रव्यकाल ये दोनों सुगम हैं । तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यकाल दो प्रकार है-- प्रधान और अप्रधान । उनमें जो प्रदेशोंकी अपेक्षा लोकके बराबर है, शेष पांच द्रव्योंके परिवर्तनमें कारण है, रत्नराशिके समान प्रदेशप्रचयसे रहित है, अमूर्त व अनादिनिधन है; वह प्रधान द्रव्यकाल है । कहा भी है--

समयादि रूप व्यवहारकाल चूंकि जीव व पुद्गलके परिणमनसे जाना जाता है, अत: वह उससे उत्पन्न कहा जाता है; और जीव व पुद्गलका परिणाम चूंकि द्रव्यकालके होनेपर होता है, अत एव वह द्रव्यकालसे उत्पन्न कहा जाता है । यह उन दोनों अर्थात् व्यवहार और निश्चय कालका स्वभाव है । इनमें व्यवहारकाल क्षणक्षयी और निश्चयकाल अविनश्वर है ।१।

✡ अ-काप्रत्यो: 'ठवण', ताप्रतौ 'ट्ठवण (रयण)' इति पाठ: । ✤ पंचा. १००.

ण य परिणमइ सयं सो ण य परिणामेइ अण्णमण्णेसिं ।
विविहपरिणामियाणं हवइ हु हेऊ सयं कालो ❂ ॥ २ ॥
लोगागासपदेसे एक्केक्के जे ट्ठिया हु एक्केक्का ।
रयणाणं रासी इव ते कालाणू मुणेयव्वा ✪ ॥ ३ ॥
कालो त्ति य ववएसो सब्भावपरूवओ हवइ णिच्चो ।
उप्पण्णप्पद्धंसी अवरो दीहंतरट्ठाई ✿ ॥ ४ ॥ त्ति ।

अप्पहाणदव्वकालो तिविहो – सच्चित्तो अच्चित्तो मिस्सओ चेदि । तत्थ सच्चित्तो – जहा दंसकालो मसयकालो इच्चेवमादि, दंस-मसयाणं चेव उवयारेण कालत्तविहाणादो । अचित्तकालो – जहा धूलिकालो चिक्खल्लकालो उण्हकालो वरिसाकालो सीदकालो इच्चेवमादि । मिस्सकालो - जहा सदंस सीदकालो इच्चेवमादि । सामाचारकालो दुविहो- लोइओ लोउत्तरीयो चेदि । तत्थ लोउत्तरीओ सामाचारकालो – जहा वंदणकालो णियमकालो सज्झायकालो ❀ झाणकालो इच्चेवमादि । लोगियसामाचारकालो जहा कसणकालो लुणणकालो ववणकालो इच्चेवमादि । आदावणकालो रुक्खमूलकालो बाहिरसयणकालो इच्चादीणं कालाणं लोगुत्तरीयसामाचारकाले अंतब्भावो कायव्वो, किरिया--

---

वह काल न स्वयं परिणमता है और न अन्य पदार्थको अन्य स्वरूपसे परिणमाता है। किन्तु स्वयं अनेक पर्यायोंमे परिणत होनेवाले पदार्थोंके परिणमनमें वह उदासीन निमित्त मात्र होता है ॥ २ ॥

लोंकाकाशके एक एक प्रदेशपर जो रत्नराशिके समान एक एक स्थित हैं उन्हें कालाणु जानना चाहिये ॥ ३ ॥

' काल ' यह नाम निश्चयकालके अस्तित्वको प्रगट करता है, जो द्रव्य स्वरूपसे नित्य है। दूसरा व्यवहार काल यद्यपि उत्पन्न होकर नष्ट होनेवाला है, तथापि वह (समयसन्तानकी अपेक्षा व्यवहार नयसे आवली व पल्य आदि स्वरूपसे) दीर्घ काल तक स्थित रहनेवाला हैं ॥ ४ ॥

अप्रधान द्रव्यकाल तीन प्रकार है – सचित्त, अचित्त और मिश्र । उनमें दंशकाल, मशककाल इत्यादि सचित्त काल है, क्योंकि, इनमें दंश व मशकके ही उपचारसे कालका विधान किया गया है । धूलिकाल, कर्दमकाल, उष्णकाल, वर्षाकाल एवं शीतकाल इत्यादि सब अचित्तकाल हैं । सदंश शीतकाल इत्यादि मिश्रकाल है ।

सामाचारकाल दो प्रकार है- लौकिक और लोकोत्तरीय । उनमें वन्दनाकाल, नियमकाल, स्वाध्यायकाल व ध्यानकाल इत्यादि लोकोत्तरीय सामाचारकाल हैं। कर्षणकाल, लुननकाल व वपनकाल इत्यादि लौकिक समाचारकाल हैं । आतापन-काल, वृक्षमूलकाल व बाह्यशयनकाल, इत्यादिक कालोंका लोकोत्तरीय सामाचारकालमें अन्तर्भाव करना चाहिये, क्योंकि, क्रियाकालके प्रति कोई भेद नहीं है अर्थात्

❂ गो. जी. ५६९. ✪ गो. जी. ५८८. ✿ पंचा. १०१. ❀ ताप्रतिपाठोऽयम् । प्रतिषु 'सं ' इति पाठः ।

कालत्तं पडि विसेसाभावादो ।

अद्धाकालो तिविहो– अदीदो अणागओ वट्टमाणो चेदि । पमाणकालो पल्लोवम-सागरोवम-उस्सप्पिणी-ओसप्पिणी-कप्पादिभेदेण बहुप्पयारो । भावकालो दुविहो-- आगमदो णोआगमदो चेदि । तत्थ कालपाहुडजाणओ उवजुत्तो आगमभावकालो । णोआगमभावकालो ओदइयादिपंचण्णं भावाणं सरूवं । एदेसु कालेसु पमाणकालेण पयदं । कालस्स विहाणं कालविहाणं, वेयणाए कालविहाणं वेयणाकालविहाणं । तत्थ इमाणि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि भवंति । कुदो ? संखा-गुणयार-ट्ठाण-जीवसमुदाहार-ओज-जुम्माणुयोगद्दाराणमेत्थेव अंतब्भावदंसणादो । ताणि काणि त्ति उत्ते उत्तरसुत्तमागयं--

पदमीमांसा-सामित्तमप्पाबहुए त्ति ॥ २ ॥

तिसु अणुयोगद्दारेसु पदमीमांसा चेव पढमं किमट्ठं उच्चदे ? ण, पदेसु अणवगएसु पदसामित्त-पदप्पाबहुआणं परूवणोवायाभावादो । तदणंतरं सामित्तपरूवणं किमट्ठं कीरदे ? ण, पमाणे अणवगए पदप्पाबहुगाणुववत्तीदो । तम्हा एसो चेव अणुयोगद्दारक्कमो होदि, णिरवज्जत्तादो ।

क्रियाकालकी अपेक्षा इनमें कोई विशेषता नहीं है ।

अद्धाकाल तीन प्रकार है-- अतीत, अनागत और वर्तमान । प्रमाणकाल पल्योपम, सागरोपम, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी और कल्पादिके भेदसे बहुत प्रकार है । भावकाल दो प्रकार है-- आगमभावकाल और नोआगमभावकाल । उनमें कालप्राभृतका जानकार उपयोग युक्त जीव आगमभावकाल है । नोआगमभावकाल औदयिक आदि पांच भावों स्वरूप है ।

इन कालोंमें प्रमाणकाल प्रकृत है । कालका जो विधान है वह कालविधान है, वेदनाका कालविधान वेदनाकालविधान कहा जाता है । उसमें ये तीन अनुयोगद्वार है, क्योंकि संख्या, गुणकार, स्थान, जीवसमुदाहार, ओज और युग्म, इन अनुयोगद्वारोंका उक्त तीनों अनुयोगद्वारोंमें अन्तर्भाव देखा जाता है । वे तीन अनुयोगद्वार कौनसे हैं, ऐसा पूछनेपर उत्तर सूत्र प्राप्त होता है----

पदमीमांसा, स्वामित्व और अल्पबहुत्व, ये वे तीन अनुयोगद्वार हैं ॥ २ ॥

शंका-- इन तीन अनुयोगद्वारोंमें पहिले पदमीमांसाका ही निर्देश किसलिये किया है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, पदोंके अज्ञात होनेपर पदस्वामित्व और पदअल्पबहुत्वकी प्ररूपणाका कोई उपाय नहीं है ।

शंका-- पदमीमांसाके पश्चात् स्वामित्वप्ररूपणा किसलिये की जाती है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, प्रमाणका ज्ञान न होनेपर पदोंका अल्पबहुत्व बन नहीं सकता । इस कारण यही अनुयोगद्वारक्रम ठीक है, क्योंकि, उसमें कोई दोष नहीं है ।

पदमीमांसाए णाणावरणीयवेयणा कालदो किमुक्कस्सा किम-णुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा ? ॥ ३ ॥

एत्थ णाणावरणग्गहण्णं सेसकम्मपडिसेहफलं । कालणिद्देसो दव्व-खेत्त-भाव-पडिसेहफलो । एदं पुच्छासुत्तं जेण देसामासियं तेण अण्णाओ णव पुच्छाओ सूचेदि । णाणावरणीयवेयणा किमुक्कस्सा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा किं सादिया किमणादिया किं धुवा किमद्धुवा किमोजा किं जुम्मा किमोमा किं विसिट्ठा किं णोम-णोविसिट्ठा त्ति । पुणो एदेणेव सुत्तेण अण्णाओ तेरस पदविसयपुच्छाओ सूचिदाओ । ताओ काओ त्ति पुच्छिदे उच्चदे-- उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा किमणुक्कस्सा किं जहण्णा किमजहण्णा किं सादिया किमणादिया किं धुवा किमद्धुवा किमोजा किं जुम्मा किमोमा किं विसिट्ठा किं णोम-णोविसिट्ठा त्ति उक्कस्सपदम्मि बारस पुच्छाओ । एवं सेसपदाणं पि पादेक्कं बारस पुच्छाओ वत्तव्वाओ । एत्थ सव्वपुच्छासमासो एगूणसत्तरिसदमेत्तो । १६९ । । तम्हा एदं देसामासियसुत्तं तेरससुत्तप्पयं । एदेसिं सुत्ताणं परूवणा उत्तरदेसामासियसुत्तेण कीरदे--

उक्कस्सा वा अणुक्कस्सा वा जहण्णा वा अजहण्णा वा । ४॥

पदमीमांसा अधिकारमें ज्ञानावरणीय कर्मकी वेदना कालकी अपेक्षा क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है और क्या अजघन्य है ? ॥ ३ ॥

सूत्रमें ज्ञानावरण पदका ग्रहण शेष कर्मोंका प्रतिषेध करनेके लिये किया है । कालका निर्देश द्रव्य, क्षेत्र व भावका प्रतिषेध करनेवाला है । यह पृच्छासूत्र चूंकि देशामर्शक है, अतः वह सूत्रोक्त चार पृच्छाओंके अतिरिक्त नौ दूसरी पृच्छाओंको भी सूचित करता है । ज्ञानावरणीयवेदना क्या उत्कृष्ट है, क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादि है, क्या अनादि है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या ओज है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है, और क्या नोम-नोविशिष्ट है ? इसके अतिरिक्त इसी सूत्रके द्वारा दुसरी तेरह पदविषयक पृच्छायें सूचित की गई हैं । वे कौनसी हैं, ऐसा पूछनेपर उत्तर देते हैं--- उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना क्या अनुत्कृष्ट है, क्या जघन्य है, क्या अजघन्य है, क्या सादि है, क्या अनादि है, क्या ध्रुव है, क्या अध्रुव है, क्या ओज है, क्या युग्म है, क्या ओम है, क्या विशिष्ट है, और क्या नोम-नोविशिष्ट है; ये बारह पृच्छायें उत्कृष्ट पदके विषयमें है । इसी प्रकार शेष पदोंमेंसे भी प्रत्येक पदके विषयमें बारह पृच्छाओंको कहना चाहिये । यहां सब पृच्छाओंका योग एक सौ उनत्तर (१६९) मात्र है । इस कारण यह देशामर्शक सूत्र तेरह सूत्रों स्वरूप है । इन सूत्रोंकी प्ररूपणा अगले देशामर्शक सूत्रके द्वारा की जाती है ।

उक्त ज्ञानावरणीयवेदना कालकी अपेक्षा उत्कृष्ट भी है, अनुत्कृष्ट भी है, जघन्य भी है और अजघन्य भी है । ४ ॥

एदं पि देसामासियसुत्तं। तेणेत्थ सेसणवपदाणि वत्तव्वाणि। देसामासियत्तादो चेव सेसतेरससुत्ताणमेत्थ अंतब्भावो वत्तव्वो। एत्थ ताव पढमसुत्तपरूवणा कीरदे। तं जहा– णाणावरणीयवेयणा कालदो सिया उक्कस्सा सिया अणुक्कस्सा सिया जहण्णा सिया अजहण्णा। सिया सादिया, पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे णाणावरणीयसव्वट्ठिदीण सादित्तुवलंभादो। सिया अणादिया, दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अणादित्तदंसणादो। सिया धुवा, दव्वट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे णाणावरणीयकालवेयणाए विणासाणुवलंभादो। सिया अद्धुवा, पज्जवट्ठियणयप्पणाए अद्धुवत्तदंसणादो। सिया ओजा, कत्थ वि कालविसेसे कलि-तेजोजसंखाविसेसाणमुवलंभादो। सिया जुम्मा, कत्थ वि कालविसेसे कद-बादर-जुम्माणं संखाविसेसाणमुवलंभादो। सिया ओमा, कत्थ वि कालविसेसे परिहाणिदंसणादो। सिया विसिट्ठा, कत्थ वि वड्ढिदंसणादो। सिया णोम-णोविसिट्ठा, कत्थ वि बंधवसेण कालस्स अवट्ठाणदंसणादो (१३)।

संपहि बिदियसुत्तस्सत्थो वुच्चदे। तं जहा– उक्कस्सणाणावरणीयवेयणा जहण्णा अणुक्कस्सा च ण होदि, पडिवक्खत्तादो। सिया अजहण्णा, जहण्णादो उवरिमासेस-

---

यह भी देशामर्शक सूत्र है। इसलिये यहां शेष नौ पदोंको और कहना चाहिये। देशामर्शक होनेसे ही शेष तेरह सूत्रोंका इसमें अन्तर्भाव बतलाना चाहिये। उनमें यहां पहिले प्रथम सूत्रकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है-- ज्ञानावरणीयवेदना कालकी अपेक्षा कथंचित् उत्कृष्ट, कथंचित् अनुत्कृष्ट, कथंचित् जघन्य और कथंचित् अजघन्य है। वह कथंचित् सादि भी है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर ज्ञानावरणीयकी सभी स्थितियां सादि पायी जाती हैं। कथंचित् वह अनादि भी है, क्योंकि द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर ज्ञानावरणीयकी वेदनामें अनादिता देखी जाती है। कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर ज्ञानावरणीयकी कालवेदनाका विनाश नहीं पाया जाता है। कथंचित् वह अध्रुव है, क्योंकि, पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर उसकी अस्थिरता देखी जाती है। कथंचित् वह ओज है, क्योंकि, किसी कालविशेषमें कलिओज और तेजोज संख्याविशेष पाये जाते हैं। कथंचित् वह युग्म है, क्योंकि, किसी कालविशेषमें कृतयुग्म ओर बादरयुग्म संख्याविशेष पाये जाते हैं। कथंचित् वह ओम है, क्योंकि, किसी कालविशेषमें हानि देखी जाती है। कथंचित् वह विशिष्ट है, क्योंकि, किसी कालविशेषमें वृद्धि देखी जाती है। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, कहींपर बन्धके वशसे कालका अवस्थान देखा जाता है। (इस प्रकार ज्ञानावरणीयकालवेदना तेरह (१३) पद स्वरूप है)।

अब द्वितीय सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है – उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना जघन्य ओर अनुत्कृष्ट नहीं होती, क्योंकि, ये उससे विरुद्ध हैं। कथंचित् वह अजघन्य है, क्योंकि, जघन्यसे ऊपरके समस्त कालविकल्पोंमें अवस्थित अजघन्य

कालवियप्पावट्ठिदे अजहण्णे उक्कस्सस्स वि संभवादो। सिया सादिया, अणुक्कस्स-कालादो उक्कस्सकालुप्पत्तीए। धुवपदं णत्थि, उक्कस्सट्ठिदीए सव्वकालमवट्ठाणा-भावादो। दव्वट्ठियणए अवलंबिदे✡ वि ण धुवपदमत्थि, चदुसु वि गदीसु कयाइ उक्कस्सपदस्स संभवादो। सिया अद्धुवा, उक्कस्सपदस्स सव्वकालवट्ठाणाभावादो। सिया कदजुम्मा, उक्कस्सकालम्मि बादरजुम्म-कलि-तेजोजसंखाविसेसाणमभावादो। सिया णोम-णोमविसिट्ठा, वड्डिदे हाइदे च उक्कस्सत्तविरोहादो। एवमुक्कस्सणाणा-वरणीयवेयणा पंचपदप्पिया। ५।।

अणुक्कस्सणाणावरणीयवेयणा सिया जहण्णा, उक्कस्सं मोत्तूण हेट्ठिमसेसवि-यप्पे अणुक्कस्से जहण्णस्स वि संभवादो। सिया अजहण्णा, अणुक्कस्सस्स❋ अज-हण्णाविणाभावित्तादो। सिया सादिया, उक्कस्सादो अणुक्कस्सुप्पत्तीए अणुक्कस्सादो वि अणुक्कस्सविसेसुप्पत्तिदंसणादो च। सिया अणादिया, दव्वट्ठियणए अवलंबिदे अणुक्कस्सपदस्स बंधाभावादो। सिया धुवा, दव्वट्ठियणए अवलंबिदे अणुक्कस्सपदस्स विणासाभावादो। सिया अद्धुवा, पज्जवट्ठियणए अवलंबिदे अणुक्कस्सपदस्स धुव-त्ताभावादो। सिया ओजा, कत्थ वि अणुक्कस्सपदविसेसे दुविहविसमसंखुवलंभादो।

पदमें उत्कृष्ट पद भी सम्भव है। कथंचित् वह सादि है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट कालसे उत्कृष्ट काल उत्पन्न होता है। ध्रुव पद नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिका सब कालमें अवस्थान नहीं रहता। द्रव्यार्थिकनयका अवलम्बन करनेपर भी ध्रुव पद सम्भव नहीं है, क्योंकि चारों ही गतियोंमें उत्कृष्ट पद कदाचित् ही सम्भव होता है। कथंचित् वह अध्रुव है, क्योंकि, उत्कृष्ट पदका सब कालमें अवस्थान नहीं रहता। कथंचित् वह कृतयुग्म है, क्योंकि, उत्कृष्ट कालमें बादरयुग्म, कलिओज और तेजोज संख्याविशेषोंका अभाव है। कथंचित् वह नोम-नोविशिष्ट है, क्योंकि, वृद्धि व हानिके होनेपर उत्कृष्टपनेका विरोध है। इस प्रकार उत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना पांच (५) पद रूप है।

अनुत्कृष्ट ज्ञानावरणीयवेदना कथंचित् जघन्य है, क्योंकि, उत्कृष्टको छोडकर अधस्तन समस्त विकल्पों रूप अनुत्कृष्ट पदमें जघन्य पद भी सम्भव है। कथंचित् वह अजघन्य है, क्योंकि, अनुत्कृष्ट पद अजघन्य पदका अविनाभावी है। कथंचित् वह सादि है, क्योंकि, उत्कृष्ट पदसे अनुत्कृष्ट पद उत्पन्न होता है, तथा अनुत्कृष्टसे भी अनुत्कृष्टविशेषकी उत्पत्ति देखी जाती है। कथंचित् वह अनादि है, क्योंकि द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर अनुत्कृष्ट पदका बन्ध नहीं होता। कथंचित् वह ध्रुव है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर अनुत्कृष्ट पदका विनाश नहीं होता। कथंचित् वह अध्रुव है, क्योंकि, पर्यायार्थिक-नयका अवलम्बन करनेपर अनुत्कृष्ट पद ध्रुव नहीं है। कथंचित् अह ओज है, क्योंकि, किसी अनुत्कृष्ट पदविशेषमें दोनों प्रकारकी विषम संख्यायें देखी जाती हैं। कथंचित् वह युग्म है, क्योंकि, किसी अनुत्कृष्ट पदविशेषमें दोनों प्रकारकी

✡ प्रतिषु 'अवलविज्जदे' इति पाठः।　　❋ प्रतिषु 'अणुक्कस्स' इति पाठः।